श्री नमिनाथ जिन पूजन

स्थापना

(नरेन्द्र छंद)

नमिनाथ प्रभु नमन करूँ मैं, मन मेरा हर्षाया।
चरण कमल की पूजन करने, भाव हृदय में आया।।
चरण पखारूँ भक्ति भाव से, भव्य भवना भावना भाऊँ।
दृढ़ वैराग्य जगा अंतर में, सिद्धालय में जाऊँ।।।1।।
जिन भक्ती से प्रेरित होकर, नाथ शरण में आया।
मेरे जिनवर तुमको निजगृह, आज बुलाने आया।।
श्रद्धा गुण युत मम मंदिर में, शाश्वत नाथ समाना।
निकट रहूँगा सदा आपके, नमिनाथ प्रभु आना।।2।।

ऊँ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ऊँ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ऊँ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(ज्ञानोदय छंद)

आतम कर्मों से मलीन है इसको धोने आया हूँ।
प्रभो! आपकी वाणी को श्रद्धा से पीने आया हूँ।
सुधा नीर लेकर आया प्रभु जन्म जरामृत नाश करो।
नमिनाथ प्रभु दर्शन देकर, ज्ञान वेदी पर वास करो।।1।।

ऊँ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ द्रव्यों की चिंता में ही जीवन चिता बनाई।
शीत द्रव्य का लेप किया पर शांति आप में पाई है।।
बावनचंदन ले आया हूँ भवाताप प्रभु नाश करो।
नमिनाथ प्रभु दर्शन देकर, ज्ञान वेदी पर वास करो।।2।।

ऊँ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आयुपल-पलघटती रहती मृत्यु से भय भारी है।
अक्षयपुर का वासी होकर नश्वर का अभिलाषी है।।
अतः आज भावों से अक्षत लाया हूँ भव नाश करो।
नमिनाथ दर्शन देकर, ज्ञान वेदी पर वास करो।।3।।

ऊँ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वभाव की गंध मिली ना, पुष्प सुगंधी लाये हैं।
तन के सुंदर आकर्षण में नरकों के दुःख पाये हैं।।
नाथ मुझे निष्काम बना दो काम बाण का नाश करो।
नमिनाथ प्रभु दर्शन देकर, ज्ञान वेदी पर वास करो।।4।।

ऊँ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना की लोलुपता में ही शुद्धि का ना ध्यान रखा।
स्वातम रस का स्वाद लिया ना व्रत संयम से दूर रहा।।
निराहार जिन आप स्वभावी क्षुधा रोग मम नाश करो।
नमिनाथ प्रभु दर्शन देकर, ज्ञान वेदी पर वास करो।।5।।

ऊँ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर के दोष दिखे हैं लेकिन निज के दोष न दिख पाये।
अंतर मं है घना अँधेरा सत्य स्वरूप नप दिख पाये।।

ज्ञान दीप प्रगटाओ स्वामी, मिथ्यातम का नाश करो।
नमिनाथ प्रभु दर्शन देकर, ज्ञान वेदी पर वास करो।।6।।
ऊँ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ये कर्म बहत दुख देते हैं कर्मों को दोष दिया करता।
स्वयं नहीं पुरुषार्थ जगाया भाव शुद्ध भी ना करता।।
धूप समर्पित करता हूँ अब, दुर्भावों का नाश करो।
नमिनाथ प्रभु दर्शन देकर, ज्ञान वेदी पर वास करो।।7।।
ऊँ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
भाव शुभशुभ जब करता हूँ पुण्य-पाप फल पाता हूँ।
कर्म उदय में जब आते हैं व्याकुल हो फल सहता हूँ।।
मोक्ष निवासी जिनवर मेरे, कर्म फलों का नाश करो।
नमिनाथ प्रभु दर्शन देकर, ज्ञान वेदी पर वास करो।।8।।
ऊँ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
सारे पद जग के झूठे हैं शाश्वत ना मिट जाते हैं।
शिवपद ही मन को भाया प्रभु तुम सा कहीं न पाते हैं।।
मद का काम नहीं शिवपथ में मम मद पूर्ण विनाश करो।
नमिनाथ प्रभु दर्शन देकर, ज्ञान वेदी पर वास करो।।9।।
ऊँ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

(ज्ञानोदय छंद)

विजयराज फल स्वप्न कहे, अपराजित तजकर प्रभु आये।
आश्विन कृष्णा द्वितीया के दिन, माता वप्रा उर आये।।
मिथिलापुर नगरी में प्रतिदिन, नूतन मंगल गान करें।
धन्य गर्भ कल्याण देवियाँ, मना-मनाकर नृत्य करें।।1।।
ऊँ ह्रीं आश्विनकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आषाढ़ वदी दशमी तिथि को जिनबाल धरा पर जन्म लियेष्।
चार प्रकार सुरों के गृह में वाद्य बजे, घट नीर लिये।।
माया पुत्र रचा इंद्राणी, माँ की गोद सुला आई।
बाल प्रभु को निरख-निरख कर, पाण्डु शिला पर ले आई ।।2।।
ऊँ ह्रीं आषाढ़कृष्णदशम्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जन्म दिवस के दिन प्रभुवर को, जाति स्मरण हुआ शुभ ज्ञान।
उत्तर कुरू पालकी बैठै, अंतर में निज आत्म विमान।।
द्वादश भावन भाई प्रभु ने, किया चैत्रवन में निज ध्यान।
एक सहस नृप ने दीक्षा ली, जय-जय जय दीक्षा कल्याण।।3।।
ऊँ ह्रीं आषाढ़कृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मगसिर सुदी एकादशमी को, कर्म घातिया नाश किया।
समवसरण में भव्यों के हित, प्रभुवर ने उपदेश दिया।।
मैंने भी सत्पथ पहिचाना, आतम का उद्धार किया।
परम ज्ञान कल्याण महोत्सव, आरति करके नमन किया।।4।।
ऊँ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लएकादश्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वैशाख वदी चैदस को धारा, प्रभु ने प्रतिमा योग महान।
अंतिम शुक्लध्यान के द्वारा, पद पाया अनुपम निर्वाण।।
कूट मित्राधर से जिनवर ने, मुक्तिरमा से मैत्री की।

इसीलिए सम्मेदाचल में, भव्य जनों ने यात्रा की।।5।।
ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अघ्र्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य

'ॐ ह्रीं अर्हं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।'

जयमाला

दोहा

वंदनीय प्रभु आप हैं, नमिनाथ मुनीनाथ।
गुण मुक्ता जयमाल है, आत्मसिद्धि के काज।।1।।

(पद्धरि छंद)

जय-जय श्री नमिनाथ आप देव हैं महान।
त्रय ज्ञान धार जन्म लिया है दया निधान।।
इक्कीसवें तीर्थेश प्रभु आपको नमन।
मुझको भी करो पार प्रभु नाशिये करम।।2।।
जाति स्मरण हुआ प्रभु वैराग्य हो गया।
तन से ममत्व छोड़ केशलोंच भी किया।।
श्री दत्तराज नृप ने आहार दे दिया।
पय धार देके पाप का संहार कर लिया।।3।।
प्रभु शिष्य न धरे न चातुर्मास ही करे।
छद्मस्थ दश मौन में विहार जो करे।।
जब घातिया को घात प्रभु केवली हुये।
नव लब्धियों को पाय ज्ञान के रवि हुये।।4।।
धरती पे ना चले अधर में ही गमन किया।
प्रभु भव्य के उद्धार को विहार है किया।।
प्रभु आपके सर्वांग से जो देशना खिरी।
गणधर कृपा हुई हमें जिनवाणी हैं मिली।।5।।
आतम स्वरूप शुद्ध है निश्चय स्वयप से।
वसु कर्म मल मलीन है व्यवहार रूप से।।
प्रभु आपने ही वस्तु तत्त्व ज्ञान कराया।
प्रभु आपने ही मोक्षये पंथ बताया।।6।।
प्रभु सर्व कर्म नाश मुक्तिधाम पा लिया।
इंद्र ने भी हर्ष से उत्सव मना लिया।।
अग्नि कुमार देव ने संस्कार रचाया।
भक्ति से भस्म को तभी मस्तक पे लगाया।।7।।
प्रभु नील कमल चिह्नित है चरण आपके।
मैं कर्म मल को धो सकूँ तब दर्श को पाके।।
नमिनाथ तीर्थनाथ का मैं वंदन करूँ।
शीघ्र मोक्ष को वरूँ मैं बंध ना करूँ।।8।।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता

श्री नमिनाथ जिन स्वामी, हो जगनामी, भव-भव का संताप हरो।
निज पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।
।। इत्याशीर्वादः।।